जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 44 संख्याः 186 प्रभात बीकानेर, मंगलवार 31 जनवरी, 2023 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

चीता धरती का सबसे तेज रफ्तार जानवर है लेकिन इसके आवासीय क्षेत्र में भारी कमी आ रही है और गत कुछ दशकों से इनकी आबादी में भी भारी कमी हुई है। इसलिए इनके संरक्षण के विभिन्न उपायों पर काम करना बेहद आवश्यक है। जर्नल ऑरिक्स में चीता कंज़र्वेशन फंड (सी.सी.एफ.) द्वारा प्रकाशित एक शोध में अनाथ चीतों के पुनर्वास प्रौजैक्ट के रिज़ल्ट का अध्ययन किया गया है। सी.सी.एफ. ने 2002 से 2018 के बीच नामीबिया में यह कार्यक्रम चलाया था। वर्ष 2002 से 2012 के बीच, मानव-वन्यजीवन टकराव के कारण अनाथ हुए 86 युवा चीतों को प्रोजैक्ट में शामिल किया गया। इनमें से 36 का 2004 से 2018 के बीच जंगल में पुनर्वास किया गया। छः महीने से अधिक उम्र के चीतों ने जंगल में अपनी माँ के साथ अधिक समय बिताया था और उनसे सरवाइवल के गुर सीखे थे। लेकिन इससे कम उम्र वाले, तीन से पांच माह के चीतों को बड़ी उम्र के चीतों के साथ रखा गया। सी.सी.एफ. की डायरैक्टर लॉरी मार्कर ने कहा, अगर चीते को बहुत कम उम्र में लाकर उम्रदराज चीते के साथ रखा जाए तो उनका परिवार जैसा बंधन बन जाएगा। शोध के अनुसार, ऐसे चीतों की, जंगल में सरवाइवल की संभावना एकल चीतों की तुलना में अधिक देखी गई। शोधकर्ताओं ने जिन 36 चीता शावकों का पुनर्वास किया उनमें से 27 चीते आत्मनिर्भर बन गए थे, पर 8 ऐसा नहीं कर पाए, उन्होंने शिकार में कोई रूचि नहीं दिखाई तथा एक को तो लैपर्ड ने मार डाला। इन चीतों को वापस संरक्षित स्थानों पर भेज दिया गया। लॉरी मार्कर पुनर्वास के बाद निगरानी रखने पर विशेष जोर देती हैं, उन्होंने जी.पी.एस. और ट्रैकिंग कॉलर्स से इनकी निगरानी की और जब तक ये नियमित रूप से शिकार नहीं करने लगे तब तक इन्हें भोजन भी उपलब्ध करवाया गया। मार्कर कहती हैं कि इनका कहां पुनर्वास किया जाए यह सोचना भी महत्वपूर्ण है। भोजन, पानी की पर्याप्त व्यवस्था होने के साथ ही इनकी रेंज भी पर्याप्त रूप से विशाल होनी चाहिए ताकि ये आराम से घूम सकें।

यात्रा के समापन के बाद, अब राहुल कांग्रेस के समक्ष प्रस्तुत समस्याओं और संकटों को संबोधित करेंगे

इन समस्याओं व संकटों की सूची में राजस्थान सबसे ऊपर है

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

श्रीनगर, 30 जनवरी। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा आज भारी बर्फबारी के बीच खत्म हुई। इसका समापन शेर-ए-कश्मीर स्टेडियम में हुआ।

उम्मीद है कि राहुल अब उन कई समस्याओं पर फोकस करेंगे, पार्टी जिनका सामना कर रही है और उन महत्वपूर्ण रिक्त पदों की नियुक्तियों पर भी ध्यान देंगे। इनमें से एक प्राथमिकता राजस्थान है।

मजेदार बात यह है कि राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तबियत खराब होने की वजह से श्रीनगर नहीं पहुंच सके। बताया जाता है कि उनके फेफड़े में एक चकत्ता है और वे निमोनिया से ग्रस्त हैं। इसके एक दिन पहले उनके ड्रिप चढ़ी थी तब डोटासरा और रंधावा उनकी कुशलक्षेप पूछने गए थे।

गहलोत की तबियत पिछले कुछ समय से ठीक नहीं है और यह चिंता का विषय है कि मुख्यमंत्री कुछ समय से बीमार चल रहे हैं।

इसके अलावा सचिन पायलट भी श्रीनगर नहीं जा सके क्योंकि भारी बर्फबारी और पुअर विज़ीबिलिटी के कारण आज सुबह फ्लाइट्स रवाना नहीं हुईं।

- पर, अजीब विडम्बना है, राजस्थान के दो बड़े नेता, गहलोत व पायलट, समापन समारोह में नहीं पहुंच पाये।
- गहलोत निमोनिया के कारण व पायलट फ्लाइट रद्द हो जाने की वजह से।
- श्रीनगर में हो रहे हिमपात के कारण, श्रीनगर से कोई भी फ्लाइट ''टेक ऑफ'' भी नहीं कर पायी तथा राहुल व प्रियंका श्रीनगर में ही अटके रहे।
- ममता बनर्जी व अखिलेश यादव ने स्वेच्छा से समापन समारोह में भाग न लेने का निर्णय लिया, परन्तु कई अन्य राजनीतिक दल, जैसे एन.सी.पी. फ्लाइट रद्द हो जाने के कारण श्रीनगर नहीं आ सके।

कांग्रेस पार्टी के नेता श्रीनगर आए क्योंकि सी.डब्ल्यू.सी. सदस्यों और पार्टी सांसदों को यात्रा के समापन के मौके पर बुलाया गया था, लेकिन राजस्थान में कांग्रेस के दोनों ही शीर्ष नेता कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके।

राहुल और प्रियंका गांधी सहित जितने भी नेता वहां आए थे, वे श्रीनगर से रवाना नहीं हो सके क्योंकि भारी हिमपात के कारण सभी फ्लाइट्स कैंसिल हो गई थी।

जहां तक विभिन्न विपक्षी पार्टियों के नेताओं का सवाल है तो सिर्फ आठ पार्टियों के नेताओं ने ही श्रीनगर की रैली में भाग लिया।

ममता बनर्जी, अखिलेश यादव व कुछ अन्य जैसे नेता जान बूझकर शरीक नहीं हुए, जबकि एन.सी.पी. व अन्य पार्टियों के नेता फ्लाइट्स कैंसिल हो जाने के कारण श्रीनगर नहीं पहुंच सके।

नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा से मुकाबला करने के लिए विपक्षी पार्टियों के प्रस्तावित गठबंधन पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह है।

समझा जाता है कि विपक्षी एकता का पूरा प्रश्न ही खटाई में पड़ चुका है।

राहुल गांधी ने हिंसा और हिंसा के दर्द को लेकर अपनी बात कही। उन्होंने कहा कि वह नहीं चाहते कि किसी मां के पास यह फोन कॉल आए कि उसका पुत्र मारा गया है। उन्होंने कहा कि ना तो किसी कश्मीरी के पास, ना ही किसी सी.आर.पी.एफ. कर्मी और ना ही किसी सामान्य जन के पास मौत से संबंधित कोई कॉल आना चाहिए।

राहुल ने अपनी यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण की है और अब समय है वास्तविक राजनीति के मुद्दों पर वापस आने का और पार्टी को पुनः पटरी पर लाने का, क्योंकि इस वर्ष कई राज्यों में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं।

अडानी ग्रुप की स्टॉक मार्केट में भारी नुकसान की छाया रहेगी बजट पर

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 जनवरी। तमिलनाडु की सत्तारूढ़ पार्टी द्रमुक ने अपने लोकसभा एवं राज्यसभा सदस्यों से कहा है कि वे 1 फरवरी से शुरु हो रहे संसद के बजट सत्र के दौरान राज्य केन्द्रित-मुद्दों तथा केन्द्र सरकार से मिलने वाली लम्बित पड़ी राशि तथा बकाया राशि, जिनके कारण तमिलनाडु पर कर्ज हो गया है, पर फोकस करें।

- सोमवार को बजट पेश होने से पहले आयोजित सर्व दलीय बैठक में डी.एम.के. पार्टी के नेताओं ने मामला उठाया व संसद में इस मुद्दे पर बहस की मांग की।
- डी.एम.के. पार्टी, कांग्रेस व विपक्ष की अन्य पार्टियों से तालमेल बिठाने की कोशिश में है कि, अडानी ग्रुप की कमजोरियों व गैर कानूनी हरकतों को संसद में उठाया जाए, जिन्हें अमेरिका के थिंक टैंक व रिसर्च फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च ने हाल ही में उजागर किया है।

द्रमुक अध्यक्ष तथा तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने दोनों सदनों के पार्टी सांसदों से कहा कि वे बी.बी.सी. डॉक्यूमैन्ट्री पर लगाये गये प्रतिबंध तथा अडाणी ग्रुप के कथित छलकपट एवं धोखाधड़ी भरे कार्यों के कारण पैदा हुये मुद्दों को लेकर सरकार को घेरे। उन्होंने कहा कि ये दोनों मुद्दे केन्द्र सरकार को घेरने के काम आ सकते हैं।

वस्तुतः द्रमुक कांग्रेस तथा विपक्षी दलों को चिनगारी प्रदान कर रही है क्योंकि उनके पास अर्थव्यवस्था की दशा महँगाई जैसे मुद्दों पर सरकर को घेरने के लिये बारूद तो तैयार है तथा इसके साथ ही, अडाणी मुद्दा भी सही वक्त पर उनके हाथ लग गया है। सोमवार को हुई सर्वदलीय मीटिंग में, द्रमुक सदस्यों ने अडाणी का मुद्दा उठाया तथा बजट सत्र में इस मुद्दे पर चर्चा कराने की माँग की।

दरअसल, स्टालिन ने रविवार को चेन्नई में एक मीटिंग ली थी, जिसमें सभी पार्टी सांसदों को निर्देश दिये थे कि वे बजट सत्र के दौरान, संसद में ठोस मुद्दे उठायें, तमिलनाडु से संबंधित मुद्दे तथा बकाया धनराशियों एवं उन योजनाओं से संबंधित मुद्दे उठायें, जो केन्द्र सरकार के पास क्रियान्वयन की प्रतीक्षा में हैं।

स्टालिन ने बी.बी.सी. द्वारा रिलीज की गई ''2002 की गुजरात हिंसा'' पर बनी डॉक्यूमैन्ट्री पर प्रतिबंध से संबंधित विवाद, भारतीय स्टॉक मार्केट में अडाणी ग्रुप को हुये नुकसान की रिपोर्ट का उल्लेख किया था। उन्होंने कहा था कि संविधान की मूलभूत रीति-नीति एवं लक्षणों को बदलने की भाजपा की कथित कोशिशों को लेकर सरकार से प्रश्न किये जावें। उन्होंने कहा कि इस बदलाव की कोशिशें कुछ विशेष वर्गों द्वारा की जारी अनावश्यक टिप्पणियों में साफ तौर पर देखे जा सकते हैं तथा इन कुछ वर्गों में भारत के उपराष्ट्रपति भी शामिल हैं। स्टालिन ने सांसदों से यह भी कहा कि वे उन पत्रों की स्थिति (स्टेट्स) भी मालूम करें जो मुख्यमंत्री ने केन्द्र सरकार को लिखे थे।

उन्होंने कहा कि पार्टी सांसद तमिलनाडु सरकार के उस विधेयक पर सरकार की प्रतिक्रिया भी जानें, जिसमें नीट से छूट देने का प्रावधान किया गया है। वे मालूम करे कि क्या राष्ट्रपति तमिलनाडु सरकार द्वारा पारित इस विधेयक पर अपनी सहमति प्रदान कर रही हैं। उन्होंने कहा कि पार्टी सांसद श्रीलंका सरकार द्वारा तमिल मछुआरों पर किये जा रहे हमलों तथा उनकी गिरफ्तारी पर भी सरकार की प्रतिक्रिया मालूम करें कि भारतीय मछुआरों की नावों को जब्त किये जाने की श्रीलंकाई सेना की गैरकानूनी कार्यवाही को रोकने के लिये सरकार क्या कर रही है।

केन्द्र सरकार राज्य में कई प्रोजैक्ट शुरु कर रही है। द्रमुक सांसदों से कहा गया कि मदुरई हवाई अड्डे को अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का रूप देना, मदुरई में एम्स की स्थापना तथा सेतु समुद्र प्रोजैक्ट के क्रियान्वयन की घोषणा किये जाने के मामलों में हुई का रिकॉर्ड रखें।

उन्होंने सांसदों से कहा कि केन्द्र सरकार के दफ्तरों तथा तमिलनाडु में स्थित केन्द्र सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों तथा अन्य ऐसे ही क्षेत्रों में तमिलनाडु के युवकों को रोजगार के अवसर देने के मुद्दे भी बजट सत्र में उठाये जायें।

बजट सत्र से पहले, सोमवार को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'ऐसा फोन किसी को भी न आए'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 जनवरी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी का कहना है कि वे नहीं चाहते कि ऐसा फोन कॉल किसी के पास आये, जैसा उन्हें उस समय मिला था, जब वे स्कूल में थे तथा उनकी उम्र मात्र 14 वर्ष थी। उस महिला ने फोन पर राहुल को बताया था कि उनकी दादी (इंदिरा गांधी) को गोली मार दी गई है।

- राहुल गांधी ने कश्मीर में कहा कि, तब वे 14 साल के थे, जब उनके स्कूल में फोन आया कि, उनकी दादी की हत्या कर दी गई है, ऐसे फोन कॉल्स की पीड़ा सैनिकों के परिवार वाले, कश्मीर के लोग समझ सकते हैं, शाह या डोवाल नहीं।

श्रीनगर में भारत जोड़ो यात्रा की समापन सभा को संबोधित करते हुये, राहुल गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री, अमित शाह तथा अजित डोवाल इस (दर्द को) नहीं समझ सकते, इसे केवल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'कांग्रेस विधायकों ने स्वेच्छा से नहीं दिए थे इस्तीफे, इसलिए किए गए अस्वीकार'

विधानसभा सचिव की ओर से राजस्थान उच्च न्यायालय में प्रस्तुत इस जवाब के बाद कांग्रेस में उठ सकते हैं कई सवाल

जयपुर, 30 जनवरी (का.प्र.)। कांग्रेस विधायकों के इस्तीफे से जुड़े मामले में विधानसभा सचिव ने सोमवार को हाईकोर्ट में जवाब पेश किया, जिसमें कहा गया कि 81 विधायकों ने 13 जनवरी 2023 को स्पीकर के समक्ष उपस्तित होकर कहा कि उनकी ओर से पूर्व में दिए गए इस्तीफे स्वेच्छा से नहीं दिए गए थे। यह एक ऐसा चौंकाने वाला जवाब है, जिसके बाद कांग्रेस की राजनीति में एक बार फिर भूचाल आ सकता है। विधानसभा सचिव की ओर से पेश किए गए जवाब के बाद अब इस बात पर बहस छिड़ सकती है कि विधायकों के इस्तीफे स्वेच्छा से नहीं दिए गए थे, तो आखिरकार किसने दबाव डालकर विधायकों को इस्तीफे देने पर मजबूर किया था।

उल्लेखनीय है कि 25 सितंबर 2022 को राजस्थान विधायक दल की बैठक बुलाई गई थी और इसके लिए कांग्रेस की ओर से मल्लिकार्जुन खड़गे को पर्यवेक्षक बनाया गया था, वही प्रभारी के तौर पर अजय माकन जयपुर

- पहला सवाल है कि, अगर इस्तीफे स्वेच्छा से नहीं दिए थे, तो किसका दबाव था जिसके कारण 81 विधायकों ने अधिकृत बैठक का बहिष्कार किया और समानान्तर बैठक करने के बाद किसके दबाव में एक बस में बैठकर विधानसभा अध्यक्ष के घर गए।
- दूसरा सवाल है, यदि विधायकों ने स्वेच्छा से इस्तीफे नहीं दिए थे तो वापस लेने में 3 महीने से ज्यादा का समय क्यों लगा।

आए थे। उस दौरान बड़ी संख्या में विधायकों ने विधायक दल की बैठक का बहिष्कार कर संसदीय मंत्री शांति धारीवाल के निवास पर समानान्तर बैठक की थी, जिसमें मुख्य सचेतक महेश जोशी भी मौजूद थे। इस बैठक के बाद देर रात को सभी विधायक एक बस में बैठकर विधानसभा अध्यक्ष के घर गए थे, जहां इस्तीफे दिए गए थे और कहा गया था कि 91 विधायकों ने इस्तीफे दिए हैं। इस प्रकरण के बाद में कांग्रेस की ओर से शांति धारीवाल, महेश जोशी और धर्मेंद्र राठौड़ को अनुशासनहीनता के मामले में नोटिस भी दिया गया था। इस मामले पर भाजपा ने विधानसभा अध्यक्ष को ज्ञापन दिए थे और जानकारी देने की मांग की थी, लेकिन विधानसभा अध्यक्ष की ओर से कोई जवाब नहीं दिया गया, इसके बाद उप नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने राजस्थान उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी।

इस याचिका में अब विधानसभा सचिव की ओर से यह जवाब पेश किया गया है कि 81 विधायकों ने स्वेच्छा से इस्तीफे नहीं दिए थे और व्यक्तिगत रूप से 6 विधायकों ने सभी के इस्तीफे दिए थे। जबकि 25 सितंबर की रात इस्तीफा देने वाले सभी विधायक एक बस में बैठकर विधानसभा अध्यक्ष के निवास पर गए थे। विधानसभा सचिव के इस जवाब के बाद कई सवाल उठ सकते हैं,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सन् 1962 और 2020 के बीच कोई तुलना नहीं है'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 जनवरी। कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता जयराम रमेश ने सोमवार को कहा कि कांग्रेस पर प्रहार करने वाली विदेश मंत्री एस. जयशंकर की हालिया

- कांग्रेस प्रवक्ता जयराम रमेश ने कहा , सन् 1962 में हमने अपनी भूमि की रक्षा के लिए युद्ध लड़ा था और 2020 में हमने अपनी ज़मीन पर चीन का अतिक्रमण स्वीकार कर लिया है।

टिप्पणियां मोदी सरकार की विफल चीन नीति से ध्यान हटाने का सिर्फ एक नवीनतम प्रयास है क्योंकि हाल ही में सबसे महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन सामने आया है कि मई 2020 से लद्दाख के कुल 65 पैट्रोलिंग पॉइन्ट्स में से 26

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'मुझे चेताया गया था, कश्मीर में मेरे पर हमला हो सकता है'

राहुल गांधी ने यात्रा के समापन समारोह में कहा, 'पर मुझे ''ग्रैनेड'' (हथ गोले) नहीं, दिल दिया प्रेम भरा'

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 जनवरी। पाँच माह तक चली जबरदस्त सफल भारत जोड़ो यात्रा के समापन संबोधन में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि यद्यपि उन्हें चेतावनी दी गई थी कि कश्मीर में उन पर हमला हो सकता है लेकिन ''यहाँ के लोगों ने मुझे हथगोले नहीं, बल्कि प्रेम से भरे हृदय दिये।'' उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता इस तरह नहीं घूम सकते, इसलिये नहीं कि लोग उन्हें घूमने नहीं देंगे, बल्कि इसलिये, कि ''वे भयभीत हैं।''

- राहुल गांधी ने मंच से यह भी कहा कि, यात्रा का ध्येय था, भारतीय संस्कृति की उदारवादी व धर्म निरपेक्ष सोच व आत्मा की रक्षा करना, जो लगातार भाजपा व संघ के प्रहारों से हताहत हो रही है।
- कांग्रेस पार्टी के महासचिव (संगठन) वेणुगोपाल ने समारोह के बाद पत्रकारों से बात करते हुए कहा, ''भारत जोड़ो यात्रा का द्वितीय चरण भी जरूर आयोजित होगा। हम सभी यह निश्चित करने में जुटे हैं, पर द्वितीय चरण कहाँ-कहाँ होकर और कैसे गुजरेगा।
- डी.एम.के., नैशनल कॉन्फ्रैंस, पी.डी.पी., सी.पी.आई., आर.एस.पी. के नेता यात्रा के समापन समारोह में मौजूद रहे, जबकि आर.जे.डी., सी.पी.आई. (मार्क्सवादी) झारखण्ड मुक्ति मोर्चा व शिव सेना के उद्धव ठाकरे खेमे के नेता, पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार श्रीनगर नहीं पहुंच सके, भारी हिमपात के कारण सड़क मार्ग व हवाई सेवा बाधित होने की वजह से।

अपने पिता राजीव गांधी तथा दादी इंदिरा गांधी की हत्या का स्मरण करते हुये, उन्होंने किसी अपने को खोने के दर्द के बारे में उन्होंने कहा कि वे (राहुल) उन लोगों का दर्द समझते हैं जिन्होंने पुलवामा हमले में उनके अपनों को खोया था, क्योंकि उन्होंने हिंसा को और हत्या को बहुत नजदीक से देखा है। कांग्रेस नेता ने कहा कि आर.एस.एस. के नेता, जैसे प्रधानमंत्री मोदी तथा गृह मंत्री अमित शाह उन लोगों के दर्द को नहीं समझ सकते, जिनके परिजन मार डाले गये, क्योंकि उन्होंने ऐसा होते नहीं देखा।

अवसर के अनुकूल परम्परागत कश्मीरी परिधान पहने तथा नीली टोपी लगाये हुये, राहुल गांधी ने कहा कि ''मैंने यह यात्रा अपने लिये या कांग्रेस के लिये नहीं की। इसका उद्देश्य एक ऐसी विचारधारा के विरुद्ध खड़ा होना है जो देश की बुनियाद को नष्ट कर देना चाहती है।''

इसे स्पष्ट करते हुये उन्होंने कहा कि ''भारत जोड़ो यात्रा का उद्देश्य देश की उदार एवं धर्मनिरपेक्ष प्रवृत्ति को बचाना है, जो उनके अनुसार, भाजपा और आर.एस.एस. के हमलों का सामना कर रही है।''

कांग्रेस नेता ने कहा कि उन्होंने पैदल चलने पर जोर इसलिये दिया क्योंकि ''मेरे परिवार और (महात्मा) गांधी ने निर्भय होकर जीना सिखाया है, अन्यथा तो जीवन, जीवन ही नहीं है।''

गांधी ने कहा कि उन्हें उस क्षेत्र में, जहाँ उनकी यात्रा का अंतिम चरण गुजरा है, ''पूरे अन्तरतम का प्रेम'' मिला है।

श्रीनगर की बर्फबारी के बीच, भारत जोड़ो यात्रा के चरम बिन्दु पर, विपक्षी दलों के नेता भी राहुल गांधी से जुड़ गये। द्रमुक, एन.सी., पी.डी.पी., सी.पी.आई., आर.एस.पी. तथा आई.यू.एम.एल. के नेता यात्रा के समापान के समय मौजूद थे। राष्ट्रीय जनता दल, मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी, झारखंड मुक्ति मोर्चा तथा शिव सेना के उद्धव ठाकरे गुट के नेताओं का भी आना तय था लेकिन वे घाटी में भारी हिमपात के कारण हवाई तथा सड़क यात्रा में आये अवरोधों के कारण नहीं पहुँच सके।

समापन सभा में, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, ''भारत जोड़ो यात्रा चुनाव जीतने के लिए नहीं, बल्कि नफरत एवं द्वेष के खिलाफ थी।''

सोमवार को यात्रा के समापन समारोह को संबोधित करते हुये, पी.डी.पी. अध्यक्ष तथा जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने कहा कि पूरा देश इस कांग्रेस नेता में आशा की एक किरण देख रहा है। नैशनल कॉन्फ्रैंस नेता उमर अब्दुल्ला ने गांधी से कहा कि वे भारत के पश्चिमी तट से पूर्वोत्तर सीमा तक की एक पदयात्रा और करें।

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि देश के प्रत्येक हिस्से के लोग उनके भाई के समर्थन-सहयोग के आगे आये।

उन्होंने कहा, ''मैं यहाँ खड़े होकर कह सकती हूँ कि देश में चल रही राजनीति इस प्रकार की है, जिससे देश का भला नहीं हो सकता।----ऐसी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'समय की बर्बादी'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 जनवरी। केन्द्रीय कानून मंत्री किरन रिजीजू ने सोमवार को कहा वर्ष 2002 के गुजरात दंगों पर बनी बी.बी.सी. की डॉक्युमैंट्री के खिलाफ दायर याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट के कीमती समय की बरबादी हैं।

- कानून मंत्री किरन रिजिजू ने यह बात बी.बी.सी. की मोदी पर बनी डॉक्युमैन्टरी के खिलाफ केस करने के मुद्दे पर कही।

उन्होंने कहा, ''इस तरह से वे कोर्ट का कीमती समय खराब करते हैं जबकि हजारों आम नागरिक न्याय के लिए इंतज़ार कर रहे हैं।